www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **March 2022**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages.

© UCLES 2022

www.xtrapapers.com

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * विश्व व्यापार मेले में आपका स्वागत है। महात्मा गाँधी की डेढ़ सौवीं जयन्ती के उपलक्ष्य में इस वर्ष के मेले का मुख्य आकर्षण है भारतीय ग्राम और कुटीर उद्योग प्रदर्शनी। इसे मेले के केंद्रीय पंडाल में लगाया गया है जो नेहरू पार्क और इंदिरा सरोवर के बीच स्थित है। प्रदर्शनी में लगी दुकानों से आप भारत के कुछ स्वावलंबी गाँवों का हाथ से बना सामान ख़रीद भी सकते हैं। पूरी जानकारी मेला पुस्तिका में हैं। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिला: क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकती हूँ?

पुरुष: जी, मैं एक मुहावरा कोश की तलाश में हूँ।

महिला: मुहावरा कोश तो नहीं है। कोई अच्छा सा शब्दकोश ले लीजिए! उसी में मुहावरे भी मिल जाएँगे!

पुरुष: नहीं, साधारण कोशों में गिने-चुने मुहावरे ही होते हैं।

महिला: मैं जानती हूँ। लेकिन उसके लिए तो आपको दरिया गंज जाना होगा।

पुरुष: क्यों? यहाँ आस-पास नहीं मिल सकता?

महिला: नहीं, यहाँ तो मुश्किल है। वैसे एक ऐप भी बन चुका है।

पुरुष: सच में? वह तो और भी अच्छा रहेगा। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: संवाद 3

MALE: * हैलो, सरिता जी। मैं राजन बोल रहा हूँ। पता नहीं आपको याद है या नहीं, हम कानपुर में आपके भाई साहब दिनेश कुमार जी के घर पर मिले थे। उनके बेटे नलिन के जन्म दिन की पार्टी थी। उसने ही मुझे आपका नंबर दिया है। मैं और नलिन एक ही स्कूल में थे। मैं एक प्रवेश परीक्षा देने दिल्ली आया हूँ और परसों वापस चला जाऊँगा। दिनेश जी ने आपसे मिलने को कहा था और कुछ भेजा भी है आपके लिए। कृपया मेरा नंबर नोट कर लें और संदेश मिलते ही फ़ोन करें। शुक्रिया। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

www.xtrapapers.com

[Pause 3 seconds]

FEMALE: संवाद 4

MALE: * पुरुषः नमस्ते। कहिए क्या सेवा करूँ?

महिलाः जी, लखनऊ का एक टिकट दे दीजिए।

पुरुषः किस दर्जे का?

महिलाः साधारण दर्जे का।

पुरुषः माफ़ कीजिए, सीटें नहीं हैं। केवल प्रतीक्षा सूची में डाल सकता हूँ।

महिलाः अरे बाप रे! एक सीट भी नहीं! प्रतीक्षा सूची कितनी लंबी है?

पुरुषः ज़्यादा नहीं, दसवाँ स्थान चल रहा है। नहीं तो, पहले दर्जे का टिकट ले लीजिए।

महिलाः तो क्या पहले दर्जे में सीटें खाली हैं?

पुरुषः जी हाँ, लेकिन जल्दी फ़ैसला कीजिए। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * अमरीका ने फ़ाइनल के रोमांचक मुक़ाबले में यूरोप चैंपियन नेदरलैंड्स को दो गोलों से हरा कर महिला फ़ुटबॉल का विश्वकप फिर से अपने नाम कर लिया है। महिला फ़ुटबॉल में अमरीका का यह चौथा विश्वकप है। नेदरलैंड्स की खिलाड़ियों ने खेल के पूर्वार्ध में अमरीका को कड़ी टक्कर दी, लेकिन वे गोल करने में नाकाम रहीं। अमरीका की ओर से कप्तान मैगन रपीनो ने पैनल्टी से और रोज़ लॉवल ने सोलह गज की रेखा के बाहर मैदान से गोल किया। रेपीनो को प्रतियोगिता में कुल 6 गोल करने के लिए स्वर्णिम बूट दिया गया। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 6

FEMALE: * महिलाःभाई साहब, मुज़फ़्फ़रपुर जाना था।

पुरुषः अब देखिए, महात्मा गाँधी सेतु तो बंद हो गया है।

महिलाः तब, कौन सा रास्ता लेना होगा?

पुरुषः ऐसा कीजिए, आगे अशोक राजपथ आएगा। उस पर दाहिने मुड़ जाइए।

महिलाः उसके बाद?

पुरुषः सीधे पटना के दूसरे छोर पर चले जाइए, दिघा ब्रिज मार्ग।

महिलाः लेकिन वह तो बाँई तरफ़ न हुआ?

पुरुषः माफ़ करें, बाँई तरफ़ मुड़िए, अशोक राजपथ पर।

www.xtrapapers.com

महिलाः और उसके बाद?

पुरुषः दिघा ब्रिज मार्ग पहुँच कर दाहिने मुड़ जाइएगा। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

FEMALE: हिंदी के विकास में गाँधी जी के योगदान पर गाँधीवादी विचारक अनुपम मिश्र के विचारों को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सबसे बड़े नेता मोहनदास करमचंद गाँधी स्वयं भले ही गुजराती-भाषी थे, लेकिन हिंदी को लेकर उनका योगदान अतुलनीय रहा है। जब दक्षिण अफ्रीका से गाँधी भारत आए तो उनका पहला आंदोलन चंपारण से शुरू हुआ। चंपारण में गाँधी जी को सबसे बड़ी दिक़्क़त हिंदी को लेकर आई। इस मामले में कुछ स्थानीय साथियों ने उनकी मदद की, लेकिन गाँधी जी ने ख़ुद बहुत जतन से हिंदी सीखी।

स्वतंत्रता आंदोलन में आने से पहले गाँधी जी ने पूरे देश का भ्रमण किया और पाया कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो पूरे देश को जोड़ सकती है। इसलिए उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही। आज़ादी के बाद जब देश का बँटवारा हुआ तो किसी विदेशी पत्रकार ने उनसे दुनिया को संदेश देने की बात कही। उसका गाँधी जी ने जो जवाब दिया वह बहुत मार्मिक है। उन्होंने कहा कि कह दो दुनिया से कि गाँधी को अंग्रेज़ी नहीं आती। बेशक़, इस जवाब के पीछे बँटवारे को लेकर उनका क्षोभ था, लेकिन ध्यान देने की बात है कि आज़ादी के पूरे राष्ट्रीय आंदोलन को गाँधी जी ने ही हिंदी से जोड़ा था। यही कारण है कि अहिंदी भाषी नेताओं को भी हिंदी की शरण में आना पड़ा।

उनके ज़्यादातर भाषण गुजराती शैली की हिंदी में हैं, जिसने जनता के साथ उनका इतना गहरा रिश्ता बनाया। हिंदी के लेखकों-कवियों के साथ भी गाँधी जी के रिश्ते बहुत गहरे रहे। महाकवि निराला का किस्सा तो प्रसिद्ध है कि जब गाँधी जी ने कहा कि हिंदी में कोई टैगोर नहीं है, तो निराला भड़क गए और गाँधी जी से विरोध किया। गाँधी जी ने इसे लेकर अपनी भूल स्वीकार भी की।

ऐसा ही पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी के साथ हुआ। उनकी किताब 'चॉकलेट' पर जब पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी ने अश्लीलता का आरोप लगाया और उसे घासलेटी साहित्य कहा तो मामला गाँधी जी तक पहुँचा। गाँधी जी ने किताब पढ़ी और उग्र जी को उस आरोप से बरी करते हुए उसे समाज के हित में बताया। उस पर बाक़ायदा उन्होंने अपने पत्र हरिजन में लेख भी लिखा।

हिंदी लेखकों पर उनका क्या प्रभाव रहा, यह समझने के लिए उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की रचनाएँ पढ़ी जानी चाहिए। प्रेमचंद ने माना भी है कि उनका हिंदी और राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ना गाँधी जी के कारण ही संभव हुआ। गाँधी जी जैसी हिंदी लिखते और बोलते थे, उसे वे हिंदी नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानी कहते थे। यह उस समय की संस्कृतनिष्ठ हिंदी से अलग थी। यह सहज-सरल हिंदी थी, जिसका गाँधी जी ने एक संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया। उनका यह वाक्य बहुत प्रसिद्ध है कि 'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।'

© UCLES 2022

www.xtrapapers.com

गाँधी जी सिर्फ़ राष्ट्रीय नेता ही नहीं थे, अपने समय के बहुत अच्छे पत्रकार भी थे। हिंदी, अंग्रेज़ी और गुजराती भाषाओं में उन्होंने कई अख़बार भी निकाले। हिंदी में उन्होंने दो अख़बार निकाले - 'नवजीवन' और 'हरिजन सेवक।' अपने ज़्यादातर पत्रों का जवाब भी गाँधी जी हिंदी में ही देना पसंद करते थे। इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी अगर राष्ट्रभाषा बन सकी तो उसमें गाँधी जी का बड़ा योगदान रहेगा। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अनुपम मिश्र जी के विचार अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

FEMALE: कर्नाटक की प्रतिभाशाली इंजीनियर डॉ गीता मंजुनाथ के साथ नए क्षितिज के संवाददाता हरि साल्वे की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: हरि: * डॉ गीता मंजुनाथ, नए क्षितिज के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

गीता: धन्यवाद, हरि जी।

हरि: गीता जी, आपने इंजीनियरी की पढ़ाई की, कृत्रिम बुद्धि और मशीन प्रशिक्षण पर शोधकार्य किया लेकिन कंपनी स्वास्थ्य सेवा की बनाई। हमारे युवा पाठकों को इंजीनियरी से स्वास्थ्य सेवा कंपनी की शुरुआत करने तक के अपने सफ़र के बारे में थोड़ा बताइए कि यह सब कैसे हुआ?

गीता: हरि जी, मशीनों से मेरा नाता बचपन से ही रहा है। मेरे पिता जी इंजीनियर तो नहीं थे लेकिन उनका दिमाग़ इंजीनियरों की तरह चलता था। उन्हें घर की ख़राब हो जाने वाली चीज़ों की मरम्मत करने का शौक़ था। वे मुझे भी अपने साथ लगा लेते थे और मशीनों से खेलने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

हरि: लेकिन आप क्या बनना चाहती थीं, इंजीनियर या कुछ और?

गीता: असल में, मेरी दिलचस्पी मशीनों से ज़्यादा कंप्यूटरों में थी। उन दिनों हमारे घरों में कंप्यूटर नहीं थे। कंप्यूटर से मेरी पहली मुलाक़ात एक प्रदर्शनी में हुई। वहाँ पर मैंने करीब आधे घंटे तक कंप्यूटर चलाया जो एक कमरे जितना बड़ा था। इस प्रदर्शनी के बाद कंप्यूटरों के क्रियाकलाप के बारे में जानने की मेरी इच्छा और प्रबल हो गई। सौभाग्य से इंजीनियरी के अंतिम वर्ष की पढ़ाई के दौरान मुझे भारतीय विज्ञान संस्थान के एक ऐसे प्रोजेक्ट में काम करने का मौक़ा मिला जिसमें हमें चार उन्नत कंप्यूटर तैयार करने थे।

www.xtrapapers.com

हरिः आपने भारत के सुपर कंप्यूटर परम पर भी तो काम किया है! वह अवसर कैसे मिला?

गीताः जी, इंजीनियरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद मुझे उन्नत कंप्यूटिंग विकास केंद्र यानी सीडैक के सुपर कंप्यूटर 'परम' की टीम में शामिल कर लिया गया और वहाँ पर मैंने जो कोड तैयार किया उसका प्रयोग आज भी हो रहा है।

हरिः तो क्या कृत्रिम बुद्धि और मशीन शिक्षा का काम आपने सीडैक में सीखा?

गीताः नहीं। उन्हीं दिनों एक अमरीकी कंप्यूटर कंपनी भारत में अपना एक शोध केंद्र खोल रही थी जिसका उद्देश्य यह साबित करना था कि भारत में भी ऐसे प्रायोगिक शोध हो सकते हैं जो व्यवसायों में काम आ सकें। सीडैक को छोड़ कर मैं वहाँ चली गई और वहाँ मुझे कृत्रिम बुद्धि और मशीन शिक्षा पर काम करने का अवसर मिला। मुझे लगा कि इन तकनीकों से आने वाले वक़्त में बहुत से काम और कुशलता से किए जा सकेंगे।

हरिः लेकिन आप तो उसके बाद स्वास्थ्य सेवा की तरफ़ चली गईं। ऐसा क्यों?

गीताः उन्हीं दिनों मुझे एक और कंपनी में काम मिला और वहाँ मेरे मन में विचार आया कि कृत्रिम बुद्धि की तकनीकों का प्रयोग स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने में भी किया जा सकता है। उन्हीं दिनों पता चला कि हमारी दो रिश्तेदारों को स्तन कैंसर है। इस ख़बर से परेशान होकर मैंने स्तन कैंसर के बारे में पूरा अध्ययन किया। तब मुझे पता चला कि ज़्यादातर मामलों में स्तन कैंसर का प्रामाणिक रूप से तब पता लगता है जब वह फैल चुका होता है। लेकिन कृत्रिम बुद्धि के ज़रिए स्तन कैंसर का पता आसानी से और उसकी आरंभिक अवस्था में लग सकता है। जिसके बाद उसका शर्तिया इलाज संभव है।

हरिः और उसके बाद आपने अपनी कंपनी बना ली!

गीताः जी हाँ। उसके बाद कुछ निवेशकों की मदद से मैंने अपनी स्वास्थ्य सेवा कंपनी खोली जहाँ हम किसी रेडियेशन के बिना कृत्रिम बुद्धि तकनीक से जाँच करके स्तन कैंसर की संभावना या आरंभिक अवस्था के बारे में बताते हैं। हमारी कंपनी ने भारत के दस बड़े शहरों के अस्पतालों में दर्जनों जाँच केंद्र खोल दिए हैं और अब हम इस तकनीक को विश्व स्तर पर सुलभ कराने की कोशिश में हैं ताकि महिलाएँ निर्भय होकर जी सकें।

हरिः डॉ गीता मंजुनाथ, अपनी पढ़ाई, शोध और कंपनी की रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

गीताः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: सोशल मीडिया की चुनौतियों पर समाज शास्त्री ऋतिका निगम और संचार विशेषज्ञ सुमित कृष्णन की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प का सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

ऋतिकाः *सुमित, आप इतना तो मानेंगे कि सोशल मीडिया की शुरुआत अधिक से अधिक लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने और विचारों के आदान-प्रदान को आसान बनाने के लिए हुई थी। लेकिन अब सोशल मीडिया लोगों के बीच द्वेष और दूरी की भावना फैलाने का ज़रिया बनता जा रहा है। सबसे ख़तरनाक बात यह है कि एक सी मानसिकता और विचारधारा वाले लोगों के गुट बन गए हैं जो केवल ज़हर उगल रहे हैं, जिससे समाज विषाक्त हो रहा है। एक घटना कहीं घटती है, तो उसे सोशल मीडिया पर तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है। लोग उसकी तह में जाने की बजाय उसे ही सही समझ कर मर-मिटने को तैयार हो जाते हैं। पुरानी कहावत है कि किसी ने कह दिया कि कौवा कान ले गया तो लोग अपना कान न देख कर कौवे के पीछे भागने लगते हैं। आज यही सोशल मीडिया का हाल है। बताइए, इससे हमारा समाज कौन सी सामाजिकता सीख रहा है?

सुमितः ऋतिका, आपकी बात सही है। लेकिन इसमें सोशल मीडिया का दोष कहाँ है? दोष उसके दुरुपयोग का है। मैं जब भी छात्रों और कर्मचारियों से मिलता हूँ तो उन्हें याद दिलाता हूँ कि जो बात ज़िंदगी में लागू होती है, वही सोशल मीडिया पर भी लागू होती है। सोशल मीडिया पर ज़रूरत से ज़्यादा समय बिताना और फ़िज़ूल के खेलों और बातों में उलझे रहना ख़तरनाक है और उसका नुक़सान हमें जीवन भर भुगतना पड़ सकता है। सोशल मीडिया का प्रयोग केवल मौज-मस्ती के लिए नहीं बल्कि रचनात्मक और रणनीतिक उद्देश्य से भी करना चाहिए। अपने रिश्तेदारों और मित्रों के संपर्क में रहने के साथ-साथ अपने संपर्क और प्रभाव का दायरा बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। अपनी युक्तियों और सूझ-बूझ को साझा करने के साथ-साथ समस्याओं के हल खोजें। नए-नए गुरों, नए-नए अवसरों की तलाश में रहें। अपनी बेबाक कहें, दूसरों की बेबाक सुनें, पर मर्यादा का ध्यान भी रखें। और हाँ, ऐसी सामग्री का आदान प्रदान करें जो रचनात्मक और प्रेरणादायक हो। क्योंकि आप सोशल मीडिया पर जो साझा करते हैं उससे आपकी एक सोशल छवि भी बनती है। सोशल मीडिया मौज-मस्ती और मेलजोल के मंच के साथ-साथ नौकरियों और व्यापार का भी प्रमुख मंच बन चुका है। आज कोई बड़ा व्यापार सोशल मीडिया के बिना नहीं चल सकता और अच्छी नौकरियाँ भी इसके बिना नहीं मिलतीं।

ऋतिकाः सुमित, ये सब बातें अपनी जगह सही हैं। लेकिन आँकड़े दिखा रहे हैं कि सोशल मीडिया समाधान की बजाय समस्या बनता जा रहा है। इसका असली उद्देश्य तो आपसी भाईचारा और मेलजोल बढ़ाना था, लेकिन देखिए कैसे परिवार और समाज में अकेलेपन की प्रवृत्ति बढ़ रही है! अगर घर में चार सदस्य हैं तो शाम को दफ़्तर से आने के बाद चारों अलग-अलग दिशाओं में बैठ कर अपने-अपने स्मार्टफ़ोन में खो जाते हैं। एक-दूसरे से बातचीत में उन्हें वह आनंद नहीं आता जो सोशल मीडिया पर आता है। यानी इसने हमारे पारिवारिक और सामाजिक रिश्तो में संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न कर दी है। घरों से हँसी-ठहाके और बहस की आवाज़ें गायब हो गई हैं। हर व्यक्ति अपने आप में अकेले बैठना चाहता है और यह अकेलापन ही तनाव, अवसाद और मानसिक विकृति को बढ़ाता है, जिसका शिकार हमारा युवा वर्ग हो रहा है। युवाओं पर हुए एक शोध के मुताबिक जो युवा सोशल मीडिया पर ज़्यादा समय बिताते हैं, वे ख़ुद पर ज़्यादा दबाव तो महसूस करते ही हैं, साथ ही वे सामाजिक रूप से भी दूसरों से कटे रहते हैं।

सुमितः देखो ऋतिका, जो लोग समाज से कटकर सोशल मीडिया में समाज देखते हैं वे बड़ी भूल करते हैं। सोशल मीडिया पर भी वही संदेश लोकप्रिय होते हैं जो सामाजिक अनुभवों पर आधारित होते हैं। सोशल मीडिया के नए लोकप्रिय मंचों पर रोमांचक यात्राओं, पार्टियों और प्रस्तुतियों वाले संदेश जितने पसंद किए जाते हैं उतनी दूसरी सामग्री नहीं। इसलिए

www.xtrapapers.com

सोशल मीडिया का प्रयोग मेलजोल और चर्चाओं को अपने दायरे से और आगे बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए न कि दायरे को बंद करके सोशल मीडिया से ही चिपक जाने में। ज़माना ब्रांडिंग का है। सोशल मीडिया ब्रांडिंग का सबसे सुलभ और सशक्त साधन बन चुका है। लोगों को समझना चाहिए कि सोशल मीडिया आपकी सामाजिकता का विकल्प नहीं है, बल्कि उसको आगे बढ़ाने का ज़रिया है। इसलिए सोशल मीडिया का प्रयोग अपनी छवि या ब्रांड बनाने और समझबूझ के दायरे को बढ़ाने में करना चाहिए, न कि दुनिया जहान से कट जाने में। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 के इन विचारों को अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.